जन जागरण की विचार प्रधान त्रैमासिकी

Anil Kumar Saxena
Advocate
Civil Court Aligarh

Anil Kumar 'Anil'
17/25, Rang Mahal
ALIGARH-202 001

तेवरी पक्ष -1

अंक : १ (जु०—सित०, ८२) वर्ष : १, एक प्रति ३/-, वार्षिक १०/-

△ संरक्षक
जफर आलम

△ संपादक
रमेशराज

△ सह-संपादक
अरुण लहरी
योगेन्द्र शर्मा
सुरेश त्रस्त

△ परामर्श
अनिल सक्सैना
एडवोकेट

△ सम्पर्क
१५/१०९, ईसा
नगर, अलीगढ़

—विवाद-न्याय क्षेत्र
अलीगढ़ होगा.

तमन्ना थी कि...

बला से हमको लटकाये अगर सरकार फांसी से
लटकते आये अक्सर पैकरे-ईसार फांसी से.

लबे-दम भी न खोली जालिमों ने हथकड़ी मेरी
तमन्ना थी कि करता मैं लिपट कर प्यार फांसी से.

खुली है मुझको लेने के लिये आगोश-आजादी
खुशी कि हो गया महबूब का दीदार फांसी से.

कभी ओ बेखबर ! तहरीके-आजादी भी रुकती है
बढ़ा करती है उसकी तेजि-ए रफ्तार फांसी से.

यहां तक सरफरोशाने-वतन, बढ़ जायेंगे कातिल
कि लटकाने पड़ेंगे नित तुझे दो चार फांसी से.

—क्रान्तिकारी रामप्रसाद 'बिस्मिल'

Scanned by CamScanner

सार्थक-सृजन
(समकालीन रचना-धर्मिता का सशक्त मंच)

क्या आप जानते हैं ?

* गजल का अर्थ है-प्रेमिका से प्रेम पूर्ण बातचीत.
* गजल शुरू से ही सामंतों, अय्याशों, नवाबों के मनोरंजन का साधन रही. उसने परोक्ष-अपरोक्ष साम्राज्यवादियों, जनविरोधियों, साजिशियों धर्म के मसीहाओं को पुष्टिकरण प्रदान किया.
* गजल का चरित्र जनपक्षीय न रहकर, शोखो, नजाकत, आशिकी, चाटुकारी-प्रवृत्ति से परिपूर्ण रहा.
* गजल खास लोगों द्वारा, खास लोगों के लिये लिखी गयी.
* गजल ने सर्वप्रथम भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ तेवर बदलने शुरु कर दिये. उसने शब्दों में क्रांति की मशालें, विद्रोह के डायनामाइट थाम लिए.
* महान क्रांतिकारी श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल' की गजलें इसका ज्वलन्त प्रमाण हैं.
* क्या आप रामप्रसाद 'बिस्मिल' की गजलों को गजलें मानते हैं ? जिनमें आग जैसे लपलपाते तेवर हैं ?
* हम उन्हें तेवरी मानते हैं, क्योंकि तेवरी कह देने-भर से स्पष्ट हो जाता है कि कोई तेवरदार बात कही जा रही है.
* हम उन समस्त गजलों को तेवरी मानते हैं जो जन-विरोधी शक्तियों को वे-नकाब करने की क्षमता रखती हैं, साथ ही जन-सामान्य को अय्याशों, साजिशियों, देशद्रोहियों के खिलाफ आंदोलित करती हैं.
* क्या आप हमसे सहमत हैं ? —तेवरी विधा की संपूर्ण पत्रिका—

तेवरी-पक्ष (त्रैमा०) हेतु

सुझाव, प्रतिक्रियाएं, लेख, रचनाएं, पुस्तक-समीक्षाएं सादर आमंत्रित हैं.

फार्म—४ (नियम ८ देखिये) घोषणा पत्र तेवरी-पक्ष

प्रकाशक, सं०-रमेशराज, भारतीय, प्रकाशन अवधि—त्रैमासिक, मुद्रक, देशबन्धु प्रेस, आगरा रोड अलीगढ़, भारतीय

प्रकाशन स्थल—१५/१०६, ईसा नगर, अलीगढ़

मैं रमेशराज एतद द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी व विश्वासानुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं.

अलीगढ़ रमेशराज

Scanned by CamScanner

मंच

तेवरी-पक्ष का प्रवेशांक आपके हाथों में है. तेवरी से सम्बन्धित सैकड़ों प्रश्न आपके दिमाग में उथल-पुथल मचा रहे होंगे. मसलन --- गज़ल समकालीन यथार्थ से जुड़कर सामाजिक संदर्भों की अभिव्यक्ति कर रही है, तब इसे एक नया नाम 'तेवरी' देने की क्या आवश्यकता है. ऐसे कई प्रश्न आपके दिमाग़ में और भी हो सकते हैं. इन प्रश्नों के एक साथ उत्तर तो हमसे सम्भव नहीं. इसके लिये हम आपके समक्ष तेवरी-पक्ष के माध्यम से समय-समय हर उपस्थित होते रहेंगे.

हमारे विचार से किसी भी वस्तु का शिल्प उतना महत्व पूर्ण नहीं होता, जितना कि उसका चरित्र. हाँ शिल्प और चरित्र एक दूसरे के पूरक होकर उसे सम्पूर्णता अवश्य प्रदान करते हैं.

उदाहरण के लिये आदमी का शिल्प यानी शारीरिक गठन पूरे समाज से देखने में भिन्नता नहीं रखता और न उसके बारे में शारीरिक गठन से कोई स्पष्ट धारणा ही बनाई जा सकती है कि अमुक व्यक्ति कैसा है ? जब हम किसी व्यक्ति का सम्पूर्ण मूल्यांकन करते हैं तो उसके चरित्र यानी सामाजिक व्यवहार, उसकी मानसिकता, उसकी कार्य प्रणाली के आधार पर करते हैं न कि शरीरांगों के आधार पर.

मां, बहन बेटी, पत्नी व्यवसायी, डाक्टर अछूत, हरिजन, महाजन, सवर्ण, चर्मकार, शरीफ, डकैत, बदमाश, कसाई, हलवाई, मंत्री, नेता, विद्यार्थी आदि शब्दों से जब भी हम सम्बोधित करते हैं तो व्यक्ति-विशेष की चारित्रिक विशेषताओं का एक साथ'क बिम्ब हमारी आँखों के सामने उपस्थित हो उठता है.

चूंकि साहित्य समाज का दर्पण होता है, और यही वजह है कि संपूर्ण हिन्दी काव्य, छन्दबद्ध कविता में-भक्ति कालीन, वीर कालीन छायावादी या फिर मुक्त छन्द में-प्रतीकात्मक, प्रयोगात्मक, यथार्थवादी अकविता, अगीत, जनवादी कविता, सहज-कविता आदि-आदि आन्दोलनों के दौर से गुजरा शिल्प के कारण नहीं, बल्कि अपनी चारित्रिक विशेषताओं यानी कथ्य के कारण. --- कहने का अर्थ यह है कि शिल्प अपने आप में उतना महत्व पूर्ण नहीं होता, जितना कि चरित्र.

तेवरीपक्ष-1 पृ०1

Scanned by CamScanner

लेकिन हिन्दी काव्य का दुर्भाग्य यह है कि गजल शब्द समकालीन संदर्भों में सामाजिक यथार्थ की कसौटी पर न तो खरा उतरता है और न अपनी सार्थकता को व्यक्त कर पाता है. यदि गजल शब्द अपनी सार्थकता को व्यक्त कर ही रहा होता तो सियासी गजल, हिन्दी गजल, अवामी गजल आजाद गजल आदि-आदि नये-नये विशेषण जोड़ने की आवश्यकता न पड़ती.

खैर… —यदि कोई तथाकथित गजल समकालीन संदर्भों में सामाजिक विसंगतियों, विकृतियों, रूढ़ियों, साजिशों, अपराधी-प्रवृतियों शोषण, दमन उत्पीडन के प्रति अपने लपलपाते अग्नि तेवर व्यक्त कर रही है तो वह गजल नहीं तेवरी है सिर्फ तेवरी. हम उसे मात्र रदीफ काफिये यानी शिल्प की बन्दिश के आधार पर गजल मानने को कतई तैयार नहीं.

कुछ शब्द अपने बारे में—तेवरी युग की घोषणा करने के बाद 'अभी जुबां कटी नहीं' तेवरी संग्रह और तेवरी-पक्ष का प्रवेशांक आपके हाथों में देने तक हमने किन परिस्थितियों का सामना किया, हम ही जानते हैं. इस बीच हमें अपने ऐसे शुभचिन्तक बनाम् कुकुरमुत्तों (जो सिर्फ सड़ी गली मान्यताओं पर उगते हैं) से भी बास्ता पड़ा जो हमें मार्ग दर्शन या सुझाव देने के बजाय हमारी टांग घसीटते रहे, आलोचना करते रहे और हमें भी कुकुरमुत्ता बनाने के प्रयास में लगे रहे. इसके साथ ही हमने ऐसे-ऐसे आर्थिक व मानसिक झटके खाये कि पूछो मत. खैर हम शुतुरमुर्ग की तरह आँधी के दौरान अपनी गर्दन रेत में गाढ़कर आँधी टलने के बाद न तो कभी सतुष्ट हुए हैं, न होंगे. हमने हर तूफान का सीना तानकर मुकाबला किया है और करते रहेंगे.

और अंत में–हम जफर आलम के विशेष आभारी हैं जिनके बल पर तेवरी पक्ष का प्रवेशांक आपके हाथों में दे रहे हैं. इसके साथ-साथ हम अपने उन समस्त सहयोगियों को भी शुक्रिया अदा करते हैं जिन्होंने रचनात्मक या आर्थिक सहयोग प्रदान करके हमारा उत्साह बर्द्धन किया.

'प्रवेशांक' पढ़कर हमें, सुझाव, प्रतिक्रियायों से अवश्य अवगत करायेंगे, इस विश्वास के साथ.

रमेशराज

तेवरीपक्ष-1 पृ02

Scanned by CamScanner

तेवरी-पक्ष

पाठकीय

अलीगढ़

तेवरी-पक्ष के सार्थक प्रयास के प्रति शुभकामनायें.

नमोनाथ अवस्थी, डोरावली

गजल निस्संदेह खाली बैठे का चुहलपन और आँख बन्द करके आम आदमी के साथ दोगलापन करना था. अब जर्जर मान्यताओं के प्रति तेवर कटु यथार्थ मय हो बेहद जरूरी हो गया है. तेवरी-पक्ष यह साहस भरा कदम उठाने जा रही है, प्रशंसनीय है.

राजकुमारसिंह, कानपुर

तेवरी आंदोलन जारी रखें.

शिवकुमार थदानी, मुजफ्फरपुर

तेवरी आंदोलन से जुड़े रहने की लालसा है.

विक्रम सोनी, इन्दौर

आपके प्रगति शील विचारों को जानकर प्रसन्नता हुई.

सतीश सारंग, सासाराम

तेवरी-पक्ष अपने धारदार तेवर लेकर आज की कुंठित मानसिकता पर प्रहार करने जा रही है, स्वागत है.

अनिल भ्रमर, इलाहाबाद

वाकई आज हिन्दी साहित्य को तेवरी की आवश्यकता है.

पंडित करनालवी, पानीपत

तेवरी अब आपका नहीं, मेरा आंदोलन है, हम कुछ नया सार्थक और ईमानदार साहित्य दे सकें, इस ओर प्रयासरत हैं, यही क्या कम है.

डा० सूरज पालीवाल, नवलगढ़

यह कोई विधा नहीं, तेवरी के खिलाफ एक लेख देना चाहता हूँ, साहस रखते हों तो लिखें.

ज्ञान प्रकाश 'विवेक', बहादुरगढ़

तेवरीपक्ष-1 पृ० 2

तेवरी-पक्ष के इस सृष्टा का हम अपने लौह तेवरों के साथ अभिनन्दन करते हैं.

राजकुमार निजात, सिरसा

भाई मेरी रचनाओं में तो तेवर ही नहीं होते.

जहीर कुरैशी, ग्वालियर

यदि तेवरी पक्ष प्रेषित पत्र की शर्तों को निभा सके तो निश्चय ही यह ऐतिहासिक वापसी होगी, बिस्मिल, दुष्यन्त की गजलों के प्रति.

चरण सिंह अमी, इन्दौर

तेवरी क्या है……? स्व० दुष्यन्त कुमार ने अपनी गजलों को तेवरी नहीं कहा है, उन्हें आप किस खाने में रखेंगे.

माहेश्वर तिवारी, मुरादाबाद

वैसे आज की गजलें बहुत बदल रही हैं, फिर भी खेद है कि लोग (तथा-कथित गजलगो) इससे कतरा रहे हैं. आपने पहल की, प्रसन्नता हुई.

चांद मुंगेरी, बोकारो स्टील सिटी

गजल या कोई विधा अपने समय के यथार्थ से जुड़कर सार्थक हो सकती है. गजल सामाजिक संदर्भों की अभिव्यक्ति करे, यही प्रयास होना चाहिये.

डा० प्रेम शकर, सागर (म० प्र०)

जब आप राम प्रसाद बिस्मिल से तेवरी का आरम्भ मानते हैं तो क्या ही अच्छा हो कि आप उनकी रचनाएँ जो भुलायी जा चुकी हैं, पुन. इस माध्यम से प्रकाश में लायें, यह स्तुत कार्य होगा.

रामकुमार वर्मा, देहरादून

पत्रिका निकाल रहे हैं शुभकामनाएं.

सुनील कौशिश, कानपुर

आपके संपादन में सृजनशील नवोदित हस्ताक्षरों को बल मिलेगा.

सम्पादक, कौमी दुनिया

आप लोगों ने पत्रिका निकालने का निर्णय लिया है, बधाई.

कृष्णानन्द कृष्ण, सं० पुनः

तेवरी पक्ष का स्वागत है.

रोहितास्व अस्थाना, हरदोई

मेरी शुभकामनाऐं आपके साथ हैं.

नरेन्द्र खरे पंकज हमीरपुर

★

तेवरीपक्ष-1 पृ० 5

नेपथ्य

जब १८९९ के लगभग दक्षिण अफ्रीका के ट्रांसवैल लोकतंत्र के जोहन्सबर्ग के पास एक सोने की खान का पता लगा, तब ब्रिट्रेन के व्यापारियों में इस बात की भगदड़ मच गई कि किसी तरह वहां पहुंचा जाये. ट्रांसवैल एक स्वतंत्र राष्ट्र था, पर व्यापारी के भड़काने पर इंगलैण्ड की सरकार उस राष्ट्र पर इतना दबाव डालने लगी कि अन्त में युद्ध की परिस्थति आ गई और वहां के राष्ट्रपति सेनापति कुगर ने अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ने की घोषणा की.

बूअर युद्ध भयंकर रुप से चला. पहले अंग्रेजों के मुकाबिले में बूअरों की जीत होती रही, जिससे सारी दुनिया को आश्चर्य हुआ आयरलैण्ड के लोग भी स्वतंत्रता के लिये लड़ रहे थे उनमें से कई लोग बूअरों की तरफ हो गये, और वे अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने लगे. दूसरे देश भी अंग्रेजों के विरुद्ध हो गये. यह न समझा जाये कि बूअर कोई दूध के धुले हुए थे, बल्कि ये अंग्रेजों से जलते थे. इस संम्बन्ध में सबसे मजेदार बात ये है कि इस समय भारतीयों में से कुछ लोगों ने दूसरा दृष्टिकोंण अपनाया और इसके फलस्वरूप श्याम जी कृष्ण वर्मा और महात्मा गाँधी में भिडन्त हो गई. हम इस प्रकरण को डा० भट्टाचार्य के शब्दों में पेश करते है :

'इन्ही दिनों नाटाल में रहकर गाँधी बैरिस्ट्री कर रहे थे और उन्हें यथेष्ट सम्मान भी प्राप्त हुआ था. उन्होंने एक स्वयं सेवक सेना का सगठन किया और उन्होंने अंग्रेजों की इज्जत बचाने के लिये यात्रा करने के बाद युद्ध में भाग लिया।

इससे बूअर सेनापति जनरल बोथा और दूसरे सेनापति बहुत ही व्यथित हुए. जब श्याम जी को ये खबर मिली तो वे लगभग बौखला गये, उनका ये कहना था कि जिस जाति ने अन्याय पूर्वक भारत वर्ष

तेबरीपक्ष-1 405

Scanned by CamScanner

पर अधिकार कर रखा है, अविवेकी शाशन व निर्लज शोषण के द्वारा भारत को गरीब बना दिया है और ध्वंश के मार्ग पर ले जा कर खड़ा कर दिया हैं, जब वही जाति एक छोटी सी जाति को पैरों तले रोंदने के लिये कटिबद्ध हुई है, उस समय बिट्रेन की सहायता से गांधी ने जो काम शुरू किया है, वह बिलकुल नाजायज, नासमझी से भरा व न्याय विरुद्ध है. इसे श्याम जी ने स्पष्ट शब्दों में प्रकट कर दिया. इस प्रकार श्याम जी उग्र से उग्र विचारों की ओर जाने लगे.

अमरीका के आयरिश प्रजातंत्रीय मुख्य पत्र गेलिक अमरीकन पत्र ने यह लिखा कि "नाटाल के भारतीयों का आचरण इतना नन्दनीय है कि उसका भाषा में वर्णन संम्भव नहीं. उन्होंने अपने ऊपर अत्याचार करने वाली ब्रिटिश सरकार की जिस तरह से सहायता की है उससे भारतीयों की बेइज्जती हुई है". ★

साभार—'वे अमर क्रान्तिकारी' △ श्री मन्मथनाथ गुप्त

समकालीन सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियों पर प्रहार करता हुआ तेवरी संग्रह—१

'अभी जुबां कटी नहीं' पढ़ें

संम्पादक—रमेशराज

सहयोगी मूल्य—पांच रुपये

इस संग्रह के सशक्त हस्ताक्षर हैं —
अरुर लहरी, अजय अंचल, योगेन्द्र शर्मा, सुरेश 'त्रस्त',
ज्ञानेन्द्र साज, रमेशराज.

जन-विरोधी मानसिकता पर एक और प्रहार-

शीघ्र प्रकाश्य तेवरी संग्रह—२

'कबीर जिंदा है'

संम्पादक—रमेशराज

मात्र आपका रचनात्मक सहयोग इस प्रहार को तीखा और धारदार बनायेगा. रचनाएं सादर आमन्त्रित हैं.

'अभी जुबाँ कटी नहीं' तेवरी सं०-१ पर कतिपय प्रतिक्रियाएं :-

रचना का हथियार के तौर पर इस्तेमाल.

डा० प्रेम शंकर, सागर (म० प्र०)

आपका परिश्रम स्पष्ट झलक रहा है: मुख-पृष्ठ ही सब कुछ कहने में समर्थ है.

डा० सूरज पालीवाल, (नवलगढ़)

अरुण लहरी, योगेन्द्र शर्मा, तथा आपकी 'लेखनी' अत्यधिक प्रभाव शाली है. तेवरी की व्याख्या प्रशंसनीय है, फिर भी एक प्रश्न है कि तेवरी को केवल गज़ल जैसा आकार क्यों दिया है ? क्या युवा कवियों का आक्रोश केवल इसी रूप में अभिव्यक्त हो सकता है ? इस तरह तेवरी को सीमा बद्ध करना कहां तक उचित है ?

आज का युग जिस ढांचे में है, आवश्यक यह है कि हम चीख-२ कर हर तरह से अपनी बात जनता तथा सरकार तक पहुंचाएं. तभी तो हम सीना ठोंक कर कह सकेंगे कि 'अभी जुबां कटी नहीं'.

डा० अनीता श्रीवास्तव, अलीगढ़

आप लोगों की रचनात्मक सक्रियता से प्रसन्नता होती है.

माहेश्वर तिवारी, मुरादाबाद

आप लोगों की रचना-दृष्टि के प्रति मेरी सहानूभूति ही नहीं, सक्रिय सहयोग है.

डा० मूलचन्द गौतम, चन्दौसी

आपने बहुत अच्छी कविताएं संग्रह की हैं. परिचयों से संघर्षमय जीवन की झांकी मिल रही है.

बाबूराम वर्मा, देहरादून

तेवरीपक्ष-1 पृ07

Scanned by CamScanner

संपादकीय में आपने ततइया के छत्तों को साहस पूर्वक छेड़ दिया है. जननी और संतान वाला चक्कर अपनी समझ से बाहर है.

ऋषभ देव शर्मा देवराज, खतौली

पुस्तक अपने आप में बे-जोड़ है.

सम्पादक–साहित्यांजलि, इलाहाबाद

'अभी जुबां कटी नहीं' बेहद पसंद आयी.

रोहिताश्व अस्थाना, हरदोई

आज ऐसी रचनाओं की जरूरत है.

जितेन्द्र राठौर, सं० प्रत्यक्ष, पटना

संग्रह बहुत ही तेज है अपने तेवर में.

जयप्रकाश त्रिवेदी' जय', फतेहपुर

क्या गजल शब्द ने अपनी अर्थवत्ता को खो दिया है ? एक अलग नाम से (आवामी गजल, राजेन्द्र प्रसाद सिंह या तेवरी आप लोगों का) आन्दोलन खड़ा करने से क्या होगा ?

कृष्णा नन्द कृष्ण, सं०–पुन:, डालटन गंज

संपादकीय में अधिक आक्रोश एवं आग्रह, जो कभी-कभी दुराग्रह की सीमा में प्रवेश करता है.

गिरिमोहन गुरू, हौशंगाबाद

इस युग में आप जैसे साहसी, निडर व्यक्ति इने गिने ही हैं.

रामानुज वर्मा, फर्रूखाबाद

'पृष्ठ भूमि' सशक्त व मारक है. गजल से मां का सम्पर्क तेवरी विधा का अपनत्व है.

सं० कौमी दुनिया, गुड़गांव

संकलन वक्त की आवाज है.

संतकुमार टंडन 'रसिक', इलाहाबाद

संकलन बहुत भाया. वाकई तेवरियों ने बर्छी का काम किया है.

पं० करनालवी, सं०-अप्सरा, पानीपत

संग्रह को संपादकीय बेहद आपत्तिजनक है.

विजय प्रेमी, सम्पादक-प्रलेखवार्ता, मेरठ

(शेष पृष्ठ ४५ पर)

राहत तुमको ये कल देंगे, बातें झूठी
बिन खाये कुछ चावल देंगे, बातें झूठी;

मीलों पानी नहीं, गगन पे खिले सितारे
सूखे पेड़ कभी फल देंगे, बातें झूठी;

आदम खोरों की बस्ती से अलग कहीं पे
अब रहने को जंगल देंगे, बातें झूठी.

नदी किनारे तड़प रही मछली बेचारी
पानी से भर मरुथल देंगे, बातें झूठी,

सिक्कों से चलते हों जिनके नाते-रिश्ते
साथ तुम्हारे वो चल देंगे, बातें झूठी.

Scanned by CamScanner

दो

तीन बीघे खेत में इतनी फसल पैदा हुई
चार दाने घर को आये, शेष जाने क्या हुई ?

आप भी आ जाइयेगा कल किसी अखबार में
इसलिए तो आज डटकर आप पर चर्चा हुई.

कल किसी मधुवन में फूलों से लदी होगी कहीं
आज उस टहनी को देखो सूखकर कांटा हुई.

बस जरा हिलते ही लहरें कितनी पैदा हो गयीं ?
आपकी अब जिन्दगी तो झील की नौका हुई.

मानता हूं ये इमारत आपकी मजबूत है
पर बताओ, जो यहां पर झोपड़ी थी क्या हुई ?

Scanned by CamScanner

तीन

बीते कल की आस हमारी मुट्ठी में
कितनी हुई उदास हमारी मुट्ठी में ?

सिर से पैरों तक पैबन्द लगे फिर भी
जिन्दा है इतिहास हमारी मुट्ठी में.

सपने हरियाली अर्पित करते लेकिन
सच में सूखी घास हमारी मुट्ठी में.

फर-फर उड़ती मेज के ऊपर बेकारी
दबीं फाइलें खास हमारी मुट्ठी में.

जाग रहा है घड़ी की सुइयों—सा जीवन
सोया है सन्यास हमारी मुट्ठी में.

Scanned by CamScanner

आये इतिहास में इंसाफ के अवसर कितने ?
भीष्म—सी साध गये चुप्पियाँ गुरुवर कितने ?

आंकड़े कत्ल के पूछो, मगर पूछो ये भी
रोज बनते हैं मेरे देश में खंजर कितने ?

मैं भटक कर भी नहीं खुद से भटक पाया पर,
रास्ते भूल गये साथ के रहबर कितने ?

हम को मिल जाते हैं हर रोज सड़क पर यारो !
आते जाते हुए सन्नाटे—भरे घर कितने ?

आपसे कहनी हैं बातें तो बहुत—सी लेकिन,
शब्द मर जाते हैं घुट—घुट के ही अन्दर कितने ?

Scanned by CamScanner

पांच

आस्मां पर एक तारे से कहा तारों ने कुछ
और समझा इस धरा पर कुछ समझदारों ने कुछ.

नाव खुद पलटी, किसी ने दी पलट, कैसे कहूं ?
जब किनारों ने कहा कुछ, और मझधारों ने कुछ.

हर भिखारी से कटोरे ने कहा, सोचो जरा—
मन ही मन कुछ चाहकर डाला है बेचारों ने कुछ.

मुंह पे ताले जड़ दिए ताली खजाने में जमा
सच कहा है जब से यारो ! चन्द अखबारों ने कुछ.

उम्र भर सबको सुनाता जख्म अपनी दास्तां
कर दिया होता अगर अहसान अंगारों ने कुछ.

Scanned by CamScanner

जहाँ रिश्तों पे कुछ इल्जाम होगा
नपुंसक भी वहां बदनाम होगा.

अगर छोटा—बड़ा एक दाम होगा
सियासत की फसल का आम होगा.

जो पहरेदार हैं चौखट के बाहर
वफादारों में उनका नाम होगा.

बगावत कह रही मीठे स्वरों में
हमें पत्थर से लेना काम होगा.

वही इतिहास के पन्ने बनेंगे—
लगा जिन पे कोई इल्जाम होगा.

Scanned by CamScanner

सात

परिवर्तन गोचर होता है यूं घर—घर में
गांव नगर में, नगर आ रहे महानगर में.

शक्ति पराजित हो जाती है मात्र समय से
सिंह खड़ा है बन्दी, बेबस चिड़िया घर में.

चीख रहे हैं शिला—लेख के अक्षर—अक्षर
निष्ठुर भी सहते रहते हैं चोट उदर में.

विजय-पताका भाई तुम कितनी फहरादो
वांछित—फल किसने पाया है बन्धु समर में?

आशाओं की मरीचिका में भटक—भटक कर
नयनों से आने लगती है प्यास अधर में.

Scanned by CamScanner

खरबूजे पर छुरी चलाई टुकड़े-टुकड़े
इज्जत अपनी बची—बचाई टुकड़े—टुकड़े.

धरती को तुम बांट चुके अब वहां चांद पर
क्या कर दोगे जाकर भाई टुकड़े – टुकड़े.

लूट लिया करते थे धन—दौलत सब लेकिन
इज्जत भी अब करें कसाई टुकड़े – टुकड़े.

पत्थर हो या कांच सभी का यही नतीजा
समय ने जब—जब चोट लगाई, टुकड़े—टुकड़े.

फूलों पर जब ओस गिरी तब बोले मोती
सुना हंस ने चोंच बढ़ाई टुकड़े—टुकड़े.

△ सम्पर्क—सिनेमा रोड, हरदोई (उ० प्र०)

खेत जब जब भी लहलहाता है
सेठ का कर्ज याद आता है.

जो भी बनता है पसीने का लहू
तोंद वालों के काम आता है.

जिंदगी आज किसी निर्धन की
ट्रक अभावों का रोंद जाता है.

जो भी आता है मसीहा बनकर
सलीब हमको सौंप जाता है.

आम, आम आदमी है यारो यहाँ
हर कोई जिसको चूस जाता है.

Scanned by CamScanner

दो

थे गर्भ में गुलाम की मुद्रा लिये हुए
पैदा हुए प्रणाम की मुद्रा लिये हुए.

आदर्श की जो बात चली, तो खड़े हुए
मंचों पे श्री राम की मुद्रा लिये हुए.

हर बार किया प्रश्न, शराबी निगाह ने
क्यों जी रहे हो जाम की मुद्रा लिये हुए ?

था फिल्मी गीत कंठ में, हिलते रहे मगर
ये होंठ वेद-साम की मुद्रा लिये हुए.

जीवन में कैसे कह दें; आया नहीं प्रभात ?
आया है मगर शाम की मुद्रा लिये हुए.

जो भी मुखड़े दिखाई देते हैं
उखड़े-उखड़े दिखाई देते हैं.

वृक्ष फूलें कि इससे पहले ही
बाग उजड़े दिखायी देते हैं

मार खा कर महंगाई की सपन
टुकड़े—टुकड़े दिखायी देते हैं.

अब तो लोगों में एक जैसे ही
सबके दुखड़े दिखायी देते हैं.

जब से विकलांग वर्ष निकला है
लोग लंगड़े दिखायी देते हैं.

Scanned by CamScanner

स्वार्थ की गीता सभी गाने लगे हैं
सभ्यता को बेच कर खाने लगे हैं.

पेट की खातिर धवल परिधान वाले
सच्चाइयों को पीठ दिखलाने लगे हैं.

कलयुगी भगवान ये भग के पुजारी
भोग को अब योग बतलाने लगे हैं.

खाल ओढ़े मेमने की भेड़िये कुछ
आदमी के सामने आने लगे हैं.

चंद सिक्कों के लिये इतिहास वाले
लौह को ही स्वर्ण लिखवाने लगे हैं.

Scanned by CamScanner

अपने ही सलीबों को उठाये हुए हैं हम
'आजाद' हैं, कई गोलियां खाये हुए हैं हम.

एक शिविर है यातना का माना जिंदगी
फिर भी नहीं कहा कि सताये हुए हैं हम.

आखें उठाके देखलें अब है जरूरी ये
मुद्दत से अपने शीश झुकाये हैं हम.

देखेंगे तमाशा अब कबीरा की तरह कुछ
अपने ही घर में आग लगाये हुए हैं हम

आज यारो इस बद निजाम के खिलाफ
मुद्राएं इन्क्लाबी बनाये हुये हैं हम.

Scanned by CamScanner

छः

आँसुओं से तर-ब-तर काजल मिला है
आज हर दृग में दुखी बादल मिला है.

प्यास ने जब—जब तलाशा नीर मीठा
अंजुरी में यार खारा जल मिला है.

गाँव छोड़ा था शहर का नाम सुनकर
किन्तु आकर शहर में जंगल मिला है.

बात खुशहाली की वे करते रहे
जिंदगी में दुख यहां प्रतिपल मिला है.

हाथ जिससे भी मिलाया है 'गुरु' से
भोगने को बस उसी से छल मिला है.

आदमी से आज किसको प्यार है ?
आदमी होना बहुत दुश्वार है.

मुट्ठियों को भींचता वो स्वप्न में
आँख खुलने पर मगर लाचार है.

दूर तक दिखती नहीं कोई किरन
हर तरफ छाया हुआ अंधियार है.

दो किनारे हैं, मगर वे दूर हैं
सामने मंझधार ही मंझधार है.

भीड़ का चेहरा पढ़ें फुरसत किसे ?
हाथ में सबके लगा अखबार है.

Scanned by CamScanner

गांव-गांव से खबर मिल रही सुनिये पंचो देकर ध्यान
जनता आज गुलेल हो रही, कविता होने लगी मचान.

नीवों में भारी हलचल है क्या हलचल का करूं बयान
भर-भर, भर-भर गिरें बुर्जियां, ढ़हें पाप के सभी मकान.

गली-गली में गिरीं बिजलियां, बस्ती बस्ती में तूफान
नगर-गाँव तक बिलख रहा है, भइया अपना हिन्दुस्तान.

लापरवाही से माली की बदला ऐसा सुनो विधान
कली-कली के फूल-फूल के हाथ-हाथ में तीर कमान.

'गोबर' कहता है संसद को और नहीं बनना दूकान
परचों पर अब नहीं लगेंगे आंख मूंद कर और निशान.

△ सम्पर्क—हिन्दी विभाग, के० के० जैन म० वि०, खतौली

अपनों पर ही वार लोग अब करते हैं
कैसे अत्याचार लोग अब करते हैं।

नकली औषधि पर है असली का लेबल
जीवन का व्यापार लोग अब करते हैं।

पावन रिश्तों पर भी गहरे धब्बे हैं
कुछ ऐसा व्यभिचार लोग अब करते हैं।

मानव से तो घृणा द्वेष ये रखते हैं
बस कुत्तों से प्यार लोग अब करते हैं।

शाकाहारी होने का तो नाटक है
केवल रक्ताहार लोग अब करते हैं।

△ सम्पर्क—पो० बो० ६०, पानीपत–१३२१०३

फजल इमाम मल्लिक

एक

बसते इस नगरी में कैसे-कैसे ये दीवाने लोग ?
पल-भर में अपने बन जाते, पल–भर में बेगाने लोग,

नम आँखें हैं, सूखे चेहरे, पेट भूख से अनुबंधित
फिर भी है मुस्कान अधर पर, ये कैसे मस्ताने लोग ?

बदले चेहरे और मुखौटे, आवाजों के मेले में
वादों की सौगात लिये कुछ आ जाते भरमाने लोग.

चांद सितारे, नग़मे घुंघरू, पायल, झांझर, खुशबू, झील
कैसे-कैसे बुनते सपने, अब तो ये दीवाने लोग ?

आंगन अम्बर, एक खुलापन, मिला कहां बोलो इनको
केवल तय करते रहते हैं, जीवन-भर तहखाने लोग ?

△ सम्पर्क—कुतुबुद्दीन लेन, दरियापुर, पटना

आँख आँख में लाल ख्वाब चाहिए
हिन्द को फिर इन्क्लाब चाहिए.

आओ इतिहास अब खून से लिखें
परचम को लाल आदाब चाहिए:

ये चट्टानें सख्त होनी हैं आज
थोड़ा और तेज इन्हें दाब चाहिए:

सूखती ही जा रही है और नदी और.
इसमें भी आज सैलाब चाहिए.

भूख ने जिसे मृत प्राय: कर दिया
ऐसी जिन्दगानी को शबाब चाहिए.

△ सम्पर्क—द्वारिकापुरी, नावाटोली, डाल्टनगंज

Scanned by CamScanner

आप इतना भी नहीं जानते, हद है
गिरगिट भी आज देश में आदमकद है.

भेड़िये सब खाल ओढ़े भेड़ की अब
है परखना कौन अच्छा, कौन बद है ?

पूछिए मत पी गये जो लहू इन्सान का
उनकी आँखों में भला ये कैसा मद है ?

इसलिए बैठा हुआ है सर झुकाये भीम
साथ दुर्योधन के उसका आज पद है

जिसको प्रमाणित किया है हादसों ने
जिन्दगी की पास उसके भी सनद है.

सम्पर्क—II सी/१-१४१, बोकारो स्टील सिटी

अब खुले नभ के तले रहने का ख्वाब है
तैयार सवालों का तेरे यूं जवाब है.

रात के हर खौफ से उन्मुक्त रहने के लिये
नजरें तलाशने लगीं अब आफताब है.

इस जिंदगी को आग बनाना है हर तरह
हर दर्द पर अब क्रान्ति की लिखनी किताब है.

हर साँस पर गुलामियत का बोझ लद गया
पाया आजादी का ये कैसा खिताब है.

इस तरह मुस्काये हैं हम हर मुसीबत में
काँटों के बीच जिस तरह कोई गुलाब है.

△ सम्पर्क—डी एन ६, आर एन III (के),
ज्वाला फ्लेट्स, डिहरी आन सान

Scanned by CamScanner

डा० ब्रजनन्दन वर्मा — एक

हर आदमी आज परेशान है भाई !
हादसों के गाँव का मेहमान है भाई !

आयेंगी बहारें कभी उम्मीद क्यों रखें ?
जब शाख-शाख बाग की बे-जान है भाई !

कीजिए मत आप यहां प्यार की बातें
डूबा हुआ नफरत में हर इन्सान है भाई !

वो आदमी जो आदमी को बांट गया है.
उस आदमी का आज भी सम्मान है भाई !

महलों में दौर चल रहे अमृत के आज कल
कर रहा निर्धन मगर विषपान है भाई !

△ सम्पर्क—सुता पट्टी, बैंक रोड, मुजफ्फरपुर

Scanned by CamScanner

बिक रहा है आज कल ईमान भी
जिंदगी का हर हंसीं मृदुगान भी.

साम्प्रदायिक गीता और बायबिल
पनपा रही है भेद अब कुरान भी.

व्यभिचारिणी हो गयी हर पद्मिनी
जूठी हुई चित्तौड़ की हर शान भी:

आदमी की बात यारो छोड़िए
डस रहे है आजकल इन्सान भी.

ये निजाम मुद्दतों से गूंगा था
आज बहरे हो गये हैं कान भी:

दो

देश को सलूक की जरूरत है
एक जागरूक की जरूरत है.

हंस के मुफलिस को लगाले जो गले
ऐसे माशूक की जरूरत है.

ये व्यस्वस्था है गूंगी कोयल
इसको अब कूक की जरूरत है

दीप अनुबंधित हैं अंधेरों से
इनको अब फूंक की जरूरत है.

राजनीति देश की खूंख्वार हुई
आज बन्दूक की जरूरत है.

△ सम्पर्क—आई—-१६६, रविशंकर शुक्ल नगर, इन्दौर

दर्द जब तक अगन नहीं बनता
जिंदगी का चमन नहीं बनता.

मुद्दतों तक पसीना बहता है
एक दिन में वतन नहीं बनता,

तीर गोली के बद सलीकों से
यूं अदीबो-अमन नहीं बनता.

जब तलक जिंदगी न करवट ले
कोई उम्दा सुखन नहीं बनता.

खून बे-शक खरीद ले दौलत
दौलतों से जेहन नहीं बनता.

Scanned by CamScanner

इक बवंडर-सा उठने वाला है
वो जहां हर जुबां पे ताला है.

फासला तंग होता जाता है
मौत को जितना-जितना टाला है.

ये जमीं दूर तक धड़कती है
एक कतरा भी जब उबाला है.

इस शहर में अजीब तड़पन है
किसने इन्सां को मार डाला है ?

कब बंधी बेड़ियों से आजादी ?
ये सलीका तो देखा भाला है.

△ सम्पर्क—काठ मंडी, सिरसा—१२५०५५

कुमार मणि

एक

सब ही आदमखोर यहाँ हैं
डाकू, तस्कर, चोर यहाँ हैं।

खुशियां तो, बनवासिन सारी
केवल गम की भोर यहां है।

अबलाओं की, लुटती इज्जत
पाप बढ़ा घनघोर यहाँ है।

भूखी तड़प रही है जनता
महंगाई का जोर यहां है।

अब तो चांद हो गयी कुर्सी
नेता हुआ चकोर यहाँ है।

Scanned by CamScanner

दो

जुल्म की दीवार ढाना चाहता हूँ
इक नया संसार लाना चाहता हूं।

छीन लीं जिसने हमारी रोटियाँ
अब उसे भूखा सुलाना चाहता हूं।

सांस भी लेना यहाँ मुश्किल हुआ
इस व्यवस्था को हटाना चाहता हूं।

हर किसी की मुट्ठियाँ तनने लगें
आग मैं ऐसी लगाना चाहता हूं।

क्रान्ति हो, विद्रोह हो, विद्रोह हो
गीत ऐसे आज गाना चाहता हूं।

△ सम्पर्क—नोरंगाबाद, अलीगढ़।

Scanned by CamScanner

बस्ती-बस्ती. नगरी-नगरी गूँज रही यह बोली
अब न खेल पायेगा कोई, यहां खून की होली.

बन्द करो, हाँ बहुत हो चुका आजादी का नाटक
जाग रही है, जाग रही है अब तो जनता भोली.

या तो तौर तरीके बदलो अपने मेरे भाई
वर्ना राजमहल को एक दिन खा जायेगी खोली.

चाहें जितना संगीनों से दे लो भाई पहरा
नहीं रुकेगी बन्दूकों से दीवानों की टोली.

अब इतिहास रचा जायेगा फुटपाथों की खातिर
खुशियों से भरनी है हमको अब जनता की झोली.

Scanned by CamScanner

कुर्सियों पर पल रहे हैं नाग प्यारे
वक्त की आवाज सुन तू जाग प्यारे.

लूटने पर जो तुला है आबरू
गोलियां सीने में उसके दाग प्यारे

सामना कर दुश्मनों का तान सीना
इस तरह कतरा के मत तू भाग प्यारे.

बर्फ की मानिंद पहले था कभी
आदमी अब हो रहा है आग प्यारे.

हर जेहन हो जाये जिससे अग्निमय
छेड़ ऐसे आज तू कुछ राग प्यारे.

Scanned by CamScanner

आतंक

संयोजक : धीरेन्द्रशर्मा, सम्पादक : नन्दल हितैषी, प्रकाशक : अन्तरा (साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों का युवा-मंच) ५१ श्रीश चन्द्र बसु मार्ग, इलाहाबाद—२११० ३. प्रथम संस्करण : १९८३ पृष्ठ -२३४ मूल्य सजिल्द २५'०० रु० सामान्य २०/-)

सिद्धान्तत: पुलिस समाज के जान माल की रक्षक है. किन्तु देखने में उसका भक्षक-रूप ही अधिक सामने आता रहा है. आज पुलिस दमन और शोषण का प्रतीक बन गई है. अधिकतर निर्दोष व्यक्ति ही उसके आतंक के शिकार होते हैं. पुलिस का यह आतंक देश की आजादी के बाद भी बढ़ा ही है, कम नहीं हुआ वह तक्षक बनकर कब किसे डस ले, कोई नहीं कह सकता. अपने नाम को सार्थकता देती हुई आलोच्य कृति 'आतंक' पुलिस के इसी आतंक को साकार रूप में प्रस्तुत करती है.

सम्पूर्ण सामग्री को तीन सोपानों में विभाजित किया गया है. प्रथम खण्ड में पुलिस-संगठन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर आठ वैचारिक निबन्ध हैं. इन निबन्धों में पुलिस-विभाग के दोषों और कारणों को उजागर किया गया है.

द्वितीय खण्ड लघुकथा की विद्या-विषयक सामग्री से सम्बद्ध है. यह सामग्री चौदह विभिन्न निबन्धों के माध्यम से लघुकथा, उसके स्वरूप, उसकी रचना-प्रक्रिया विकास-यात्रा आदि के बारे में काफी महत्वपूर्ण जानकारी देती है. निबन्ध हैं—लघुकथा : रचनात्मक विशिष्टताएँ (डा० कमल चोपड़ा), लघुकथा की रचना प्रक्रिया और नया लेखक - जगदीश कश्यप), लघुकथा-लेखन एक चुनौती (भूपाल-सिंह अशोक) लघु कथाएं: तब से अब तक (विक्रम सोनी), लघुकथा-आन्दोलन की प्रासंगिकता (अमर गोस्वामी) आदि. साधना कौशिक

द्वारा प्रस्तुत 'बयान-दर बयान' में नरेन्द्र कोहली, निरुपमा सेवती, मालती जोशी, मन्नू भंडारी आदि के द्वारा लघुकथा के सम्बन्ध में अपने-अपने विचार व्यक्त किये गए हैं: निस्सन्देह इस खण्ड की सामग्री 'लघुकथा' पर कार्य करने वाले शोधार्थी के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकती है.

तीसरे खण्ड में पुलिस-सम्बन्धी १११ लघुकथाओं का संकलन है. सर्वश्री विष्णु प्रभाकर, शंकर पुणताम्बेकर, सूरज पालीवाल आदि कई जाने पहिचाने कथाकारों के अतिरिक्त नए हस्ताक्षरों को भी स्थान दिया गया है चोरी-डकैती, रिश्वत, बलात्कार, शोषण, मुफ्त यात्रा. नकली मुठभेड़ आदि जितने भी अनैतिक व्यापारों से पुलिस जुड़ी होती है, उन सबका लेखाजोखा इन लघुकथाओं में देखने को मिलता है सही अर्थ (चित्रेश), जस्टीफिकेशन (धीरेन्द्र शर्मा), अन्तिम अस्त्र (नन्दल हितैषी), अधिकार और अधिकारी (फजल इमाम मल्लिक) दरार (सुश्री रेहाना परवीन), पुरस्कृता (विक्रम सोनी) गुनाहों का देवता (श्रीराम मीना) गोली बिलख पड़ी (शंकर पुणताम्बेकर) कुत्ते (सुरेश त्रस्त) आदि लघुकथाएँ बहुत प्रभावित करती हैं

कुछ लघुकथाएँ पुलिस के उजले पक्ष को भी प्रकाशित करती हैं और उसकी विवशता, उदारता कर्त्तव्यपरायणता का परिचय देती हैं. यथा-भीड़ (अशोक भाटिया), बीमार सन्दर्भ (सुश्री इन्दु), मानवता या कर्तव्य (कुँवर दिग्विजय सिंह गहलौत) सूरज डूबा हुआ (गोपाल शर्मा 'सिपाही'), आदमी (मदन मोहन 'उपेन्द्र') आदि.

'आतंक' का गेट अप' आकर्षक है. छपाई-सफाई का भी ध्यान रखा गया है. पर प्रूफ की अशुद्धियों (जिनके लिये सम्पादक के द्वारा खेद प्रकट किया जा चुका है) के अतिरिक्त गोली चला दिया (पृ० १८७), उसने बहुत कसम खाया (पृ० २२८) जैसे प्रयोग हिन्दी में अखरते हैं.

'आतंक' से तस्वीर का दूसरा पहलू भी सामने आता है. अर्थाभाव, सामाजिक मूल्यों का ह्रास, कानून की शिथिलता, राजनैतिक दबाब आदि कई ऐसे मुद्दे हैं, जिनके सामने पुलिस के विवेक को

घुटने पड़ते हैं और उसकी आत्मा को घटिया संस्कारों से समझौता करना होता है. अतः सारा दोष पुलिस ही के मत्थे मढ़ देना उचित न होगा, फिर भी अपने पुनीत उत्तरदायित्व को देखते हुए पुलिस को अपने और जनता के बीज सद्भावना और विश्वास का सम्बन्ध स्थापित करना अत्यावश्यक है. सभ्य राष्ट्र की पुलिस को शिष्ट और विनम्र होना ही शोभा देता है. वस्तुतः 'आतंक' के प्रकाशन का भी यही उद्देश्य है. पुलिस के रुख में परिवर्तन आना ही चाहिए. इस दृष्टि से यह कृति एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है. उस दिशा में संयोजक और सम्पादक दोनों का प्रयास स्तुत्य है और वे निश्चय ही बधाई के पात्र हैं. ★

लघुकथा : सर्जना और मूल्यांकन

सम्पादक—कृष्णानन्द कृष्ण, मूल्य – १२ रुपये

प्रकाशक—पुनः प्रकाशन, डाल्टनगंज

'लघुकथा : सर्जना और मूल्यांकन' एक ऐसी कृति है, जिसमें विभिन्न लेखकों की लघुकथाएँ संकलित हैं. ये लघुकथाएँ समाज, शिक्षा, धर्म, राजनीति आदि के क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों और कुरूपताओं का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती है. न्याय (अमरनाथ चौधरी) गुलाम (अनिरुद्ध सिंह), जुर्म (गोकुल बसन्त), समाचार, (चांद मुंगेरी) नरक (प्रमोद भारतीय), साधु महाराज (मुकेश रावत), आदमी और आदमी (सतीश राठी), कीमत (संजय सहाय), लाँछन (सुरंजन), फर्क (ज्ञानप्रकाश विवेक), आतंकवादी (रमेश राज) आदि लघुकथाएँ बड़ी मार्मिक बन पड़ी हैं.

संकलन के द्वितीय खण्ड में लघुकथा-विषयक निबन्धों को समाविष्ट किया गया है. 'लघुकथा का शरीर विज्ञान और प्रसवगाथा' डा० (ब्रजकिशोर पाठक), 'लघुकथा : शिल्प तथा सम्भावनाएं' (डा० जगदीश्वर प्रसाद) तथा 'लघुकथा : तब से अब तक' (विक्रम सोनी), शीर्षक निबन्ध जहां लघुकथा के स्वरूप और उसके विकास का परिचय देते हैं, वहीं डा० चन्देश्वर कर्ण का निबन्ध 'लघुकथा : भटकाव और मूल्यांकन की दिशा' लघुकथा के सम्बन्ध में उठाई गई शंकाओं का किसी सीमा तक समाधान भी करता है. ★

Scanned by CamScanner

उपहार, लघुकथा संकलन

सम्पादक : रवीन्द्रखरे, अजयसिंह परिहार, मूल्य—दस रुपये
प्रकाशक-युवा साहित्य परिषद, सतना

लघुकथा साहित्य की एक सशक्त विधा है. नावक के तीर की तरह वह अपना प्रभाव छोड़ती है. इधर कुछ समय से लघुकथा-लेखन की धारा विशेष गतिशील हो उठी है और कई लघुकथा-संग्रह प्रकाश में आए हैं.

'उपहार' लघुकथा संकलन में ६३ कथाकारों की रचनाओं को स्थान मिला है. संकलन की तीन सर्वोत्तम लघुकथाओं का चयन कर उन्हें पुरस्कृत भी किया गया है. ये लघुकथाएँ हैं–१. प्रजातंत्र (कुँवर अनजान), २. तीन बेटे (डा० किशोर काबरा) तथा ३. विवशता (हीरालाल नागर).

संकलन की कुछ अन्य रचनाओं में भी समाज और व्यवस्था पर तीखे व्यंग्य का प्रहार करने की क्षमता है, योग्यता (प्रवीण परिमल), देव-शयन (दिनेश पाठक 'शशी') अन्तहीन सिलसिला (विक्रम सोनी), शोहरत (डा० राजेन्द्र कुमार शर्मा), बाप-बेटा (प्राणेशंकुमार), बैनर (शराफतअलीखान) आदि ऐसी ही लघुकथाएँ है.

★ △ समीक्षक—डा० गोपाल बाबू शर्मा

समन्वय– १ व २, कविता संग्रह : सम्पादक–अनिरुद्ध कुमार पान्डेय, सम्पर्क—२४/१८७५, एम० एच० बी० कालोनी, गोराई रोड, बोरिवली, बम्बई—९२.

कविता जब तक सामाजिक यथार्थ की अग्नि–भट्टी से होकर नहीं गुजरती, लोहे की तरह नहीं तपती, तब तक उससे कुव्यवस्था के खिलाफ न तो कोई प्रहारक हथियार बनाया जा सकता है और न सामाजिक परिवर्तन का कोई साधन. कुछ इसी तरह की विडम्बना श्री अनिरुद्ध कुमार पांडेय द्वारा सम्पादित समन्वय-१ व २ के साथ जुड़ी हुई है. प्रस्तुत कविता संग्रहों की अधिकांश कविताएं प्रेम, विरह के इर्द गिर्द घूमती हुई दिखाई देती हैं, जिनमें न तो सामाजिक-

Scanned by CamScanner

विकृतियों, विसंगतियों को दूर करने की तिलमिलाहट है न कोई ललक.

फिर भी समन्वय-१ में अगम शर्मा, कुलदीप कुमार अहिर तथा समन्वय-२ में पूरन निर्दोष, भूपेन्द्र मिश्र. राधेश्याम मिश्र, अगम शर्मा आदि की कविताएं बहुत कुछ सोचने पर मजबूर करती है, कुल मिलाकर संग्रह सामान्य हैं.

★

△ समीक्षक-अरुण लहरी

('पत्र पत्रिकाओं से' का शेष)

पृष्ठभूमि में तेवरी शब्द की अभिव्यक्ति सार पूर्ण नहीं है, जबकि तेवरी शब्द का आशय शुद्ध वर्तमान परिस्थितियों का अवलोकन है. आदिकाल के अभिलेखों को छूना आवश्यक महसूस नहीं होता. राजसी कवियों का महत्व तब था, अब नहीं. व्यास. तुलसी, बिहारी आदि ने तत्कालीन परिस्थितियों के अनुकूल लिखा, उनका साहित्य केवल साहित्य है, राजसी साहित्य नहीं. आधुनिक साहित्य पर दोषारोपण एक बचपने से अधिक कुछ नहीं तेवरी साहित्य व्यस्क वर्ग को गर्मी या बवाल तो दे सकता है, दिशा नहीं विध्वंसक साहित्यकारों को एक अलग मंच पर स्थापित करने की यह नीति कहां तक न्याय पूर्ण है ? निर्णय स्वयं तेवरी आंदोलन कर्ता करें.

राजकुमार निजात, सं० अभिव्यक्ति, सिरसा

कविताएं पढ़ो, उद्‌गार सुन्दर हैं. पर इससे शत्रु का कुछ बिगड़ेगा नहीं, दुःख तो यह है.

मन्मथ नाथ गुप्त, दिल्ली

देखना यह है कि सरपंचों पर चाकू के मानिंद उठी लेखनी के भाव जांघों के भूगोल में तो नहीं खो जाते ?

रामगोपाल शर्मा, अलीगढ़

तेवरी के सकारात्मक रुख से आशा बंधती है.

केशव रत्नम्, सं०-सरचना, बरौनी (बिहार)

यदि प्रोडक्शन पर ध्यान दिया जाता तो और उपयोगी होता, खैर ... प्रयास वन्दनीय है.

भूपाल सूद, सं०-अयन' दिल्ली

श्रीमती इन्दिरा गान्धी व महादेवी वर्मा का एक मच पर लक्ष्मी व सरस्वती का मिलन तथा शक्ति और भक्ति का संगम था, जिससे न केवल सभा मंडप, हिन्दी प्रदेश और पूरा राष्ट्र कृत्य-कृत्य हो गया. धन्य हो गया, तर गया.

२८-मई-८३, शिव मंगल सिंह 'सुमन'

△ सुमन जी ! पूरा राष्ट्र तरे या न तरे, आप जरूर तर जायेंगे. लगता है भारत-भारती पुरस्कार अगली बार आपको मिलने वाला है.

जो सरकार ३६ वर्षों में देश की भूखी नंगी जनता को रोटी नहीं दे सकती, वही सरकार ३५ करोड़ से एशियाड की अय्याशी करती है. लोक तंत्र का दम भरती है. ऐसी सरकार का पुरस्कार किस काम का जो असम में स्त्री व बच्चों पर गोलियां चलवाती हो. आज सरकार मुझे ऐसा पुरस्कार दे तो मैं ठुकरा दूंगी. महादेवी वर्मा

△ महादेवी जी ! अब तो आपने उन्हीं हाथों से पुरस्कार ले लिया. आप को उसी भूखी नंगी, गोलियों से छलनी हुई जनता की तरफ से बधाई.

वर्ग संघर्ष में हिस्सा लेने वाले सर्वहारा का रचनाकार होने का मैं दावा नहीं करता, ऐसा दावा कितने कवि कर सकते हैं ? मेरी विनम्र राय में कविता आज भी संघर्ष की दृष्टि से अपना आँचल बचाकर, प्रियतम से मिलने के लिये निकली लड़की की तरह चल रही है. ठा० प्रसाद सिंह

△ ठाकुर साहब ! सरकारी भोंपुओं ने वर्ग संघर्ष में हिस्सा लेने का दावा न कभी किया है और न कभी कर सकते हैं. कविता इस अवस्था में भी आपको प्रियतम से मिलने वाली लड़की नजर आ रही है, आपके लिये गर्व की बात हो सकती है. मगर सारे हिन्दी काव्य को

Scanned by CamScanner

शर्मिन्दा करने के अधिकार आपको किसने दिये ?

समाज में सबसे ज़्यादा ईमानदार पेशा वैश्या का है, क्योंकि इस व्यापार में क्रेता और विक्रता दोनों को यह मालूम होता है कि माल कैसा है और दाम कितना है ? जैनेन्द्र कुमार

△ जैनेन्द्र जी ! इस वक्तव्य के बाद इन ४० वर्षों में आपने भारत के कितने हिस्सों को वैश्यालयों में तब्दील कर दिया है, बताने का कष्ट करें ? शायद आपको भी इस ईमानदार पेशे के लिये सरकार कोई पुरस्कार दे दे. आप तो व्यर्थ ही साहित्य जैसे बेईमानी के पेशे में पढ़े हुए हैं. ☆

—: कुछ महत्वपूर्ण पत्र–पत्रिकाएं :—

दस्तावेज (त्रै०), सं०-विश्वनाथ तिबारी, बेतियाहाता, गोरखपुर (उ० प्र०)

लहर (मा०), सं०-प्रकाश जैन, महात्मा गांधी मार्ग, अजमेर.

आदमी (त्रै०), सं०- नरेन्द्र मौर्य, गढ़ीपुरा, हरदा (म० प्र०)

यात्रा (अनि०), सं०-अनिल खम्परिया, कृष्ण कुटीर, जालपा देवी वार्ड कटनी.

ऋतुचक्र (त्रै०), सं०-विक्रम कुमार, ६५ पत्रकार कालौनी, कनाडिया मार्ग, इन्दौर

आशय (त्रै०), सं०-अनिल भ्रमर, इन्द्रप्रस्त, २७६ कृष्ण नगर इलाहाबाद

प्रसंग (अनि०), सं०-शम्भु बादल, सरौनी खुर्द, जगन्नाथ धाम, हजारी बाग (बिहार)

दृष्टि (त्रै०), डा० दिवाकर, शशि निवास, मिर्जापुर (लाइनपार) नवादा-८०५१२०

हाथ (त्रै०), सं०-नीलकांत, ६३३, कर्नलगंज, इलाहाबाद

संरचना, सं०-केशव रत्नम्, ए-६४, उर्वरक नगर, बरौनी (बिहार)

अयन (त्रै०), सं० भूपाल सूद, १/२०, महरौली, नई दिल्ली.

लघु आघात (त्रै०) सं० विक्रम सोनी, आई-१६६ रविशंकर शुक्ल नगर, इन्दौर.

कंचन काबेरी (मा०) सं० अमर चन्द वर्मा II फ्लोर, के० एस० मार्केट, दीवान खान लेन, बेंगलोर — ५३

Scanned by CamScanner

प्रति शीर्षक (त्रै०) डा० बी० एन० सिंह, १११/६३ ए-२२ महापालिका फ्लैट्स, अशोक नगर, कानपुर.

पुनः सं० कृष्णानंद कृष्ण, लोक, स्वास्थ्य अपर प्रमंडल, पानी टंकी डालटन गंज.

कोमा (त्रै०) सं० डा० रणधीर श्रीवास्तव, १२८/६३ डी०, किदवई नगर, कानपुर.

अम्बालिका (मा०) सं० रामबाबू नीरव, डा० राम मनोहर लोहिया पथ, जनकपुर रोड.

वै० कलमकार (मा०) सं० मनोज मित्र, पाली रोड, डिहरी आन सान रोहतास (बिहार)

कौमी दुनिया (मा०) सं० हरिदास, ३७८/७ प्रताप नगर, गुड़गांव —१२२००१

सर्व सचेत (मा०) सं० छाजुराम स्नेक, चान्दू बाड़ा, नारनौल-१२३००१
दर्शन मन्थन (मा०, सं० राधे अज्ञानी, मानव परिषद, इमामगंज, मुजफ्फरपुर.
नन्हीं मुस्कान (मा०) सं० राजेन्द्र निगम ५१/११ विजय नगर, कानपुर-५
नवोदित स्वर सं० रजनीश त्रिवेदी आलोक, २/४ धामावाला बाजार पुरानी कोतवाली, देहरादून.
आगमन (त्रै०) सं० तरुण जैन, ६७६६, बल्लू बाड़ा, रेबाड़ी-१२३४०१
खिले अधखिले सं० अकुर, सी० १०४१/२ रामसागर मिश्रनगर, लखनऊ—१६

प्रसंगवश त्रै०) सं० डा० वेदप्रकाश अमिताभ अशोक भवन, मानसिंह गेट, अलीगढ़.

पलामू दर्शन (सा०) सं० श्याम बिहारी सिंह श्यामल, डाल्टनगंज.
जन विक्रांत (सा०) गांधी पथ, सासाराम (रोहतास)
गतिविधियाँ सं० हरिमोहन निशाँत, ५/४४ ए मदिया कटरा, आगरा.
जंग जारी है (सा०) सं० वेद्य महावीर प्रसाद, डबवाली मार्ग, सिरसा
अभिव्यक्ति (मा०) सं० राजकुमार निजात, ५ दुर्गा मंदिर, सिरसा-५५
कब कहां (सा०) सं० अशोक बांसल, सुनाम—१४८०२८

★

शुभ कामनाओं सहित—

पूर्ण सुरक्षा व विश्वसनीयता का एक मात्र आधार

शर्मा लॉक्स

शर्मा एन्टरप्राइजेज

ईसा नगर, अलीगढ़

शुभ कामनाओं सहित—

डा० आसिफ रफीक, दन्त चिकित्सक

ऊपर कोट, अलीगढ़

शुभ कामनाओं सहित—

मधु कैमीकल वर्क्स

कुमार भवन, नैनीताल रोड, बरेली

शुभ कामनाओं सहित—

हजारी हैन्डलूम्स एम्पोरियम

चौराहा अब्दुल करीम, अलीगढ़

शुभ कामनाओं सहित—

सरोज वस्त्र भंडार

प्रो० रामगोपाल माहेश्वरी

जयगंज बाजार, अलीगढ़

Scanned by CamScanner

With best Compliments from–

NERVY LOCK CO.

If all the door safety devices are similar—you're mistaken

Traditional lock on aldrop to live in constant fear

Link Rod lock a new concept to live without fear

- × Six precision lever mechanism.
- × Double reinforcement of the built-in-lock.
- × Available in 8" anh 11" rod lengths for single aud double doors.
- × Whole assembly being compact, external leverage is not possible to temper with.
- × Three milled keys.

Link Rod lock Now incorporated with double locking device

Link lock as good as it looks

C-7, INDUSTRIAL ESTATE, ALIGARH–202001
PHONE–4983, 4199, 5440

जनरल स्टोर पंजाबी बाग

संपादक रमेशराज सार्थक सृजन पब्लिकेशन ईसानगर अलीगढ़ के लिये देशबन्धु प्रेस, आगरा रोड, अलीगढ़ से मुद्रित.

Scanned by CamScanner